॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष ३२, अंक ३७ एक प्रति : ३ रुपये

सोमवार ५ अक्तूबर, २००९ से ११ अक्तूबर, २००९ तक

विक्रमी सम्वत् २०६६ दयानन्दाब्द : १८६

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०९ वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com पृष्ठ सं १ से ८ तक

दर्शन व्याख्या - 16

न्याय दर्शन के अनुसार 'आत्मा' का स्वरूप

गतांक से आगे :–

चूंकि आत्मा शरीर में रहता है, अतः ये गुण शरीर में दिखलाई पड़ते है, हालांकि सुख दुःखादि का भोक्ता जड़ शरीर नहीं जीवात्मा ही होता है, पर लगता यह है कि इन्हें शरीर भोग रहा है। आत्मा के न रहने पर शरीर में इच्छा द्वेषादि के लक्षण दिखलाई नहीं पड़ते, क्योंकि वस्तुतः ये लक्षण शरीर के नहीं आत्मा के हैं और यही न्यायदर्शन का मन्तव्य है।

न्यायदर्शन के तृतीय अध्याय के प्रथम आह्निक में आत्मा की पृथक सत्ता को प्रमाणित करने के लिए महर्षि गौतम ने पूर्वपक्ष के रूप में उन प्रश्नों का तात्विक तार्किक सटीक एवं सोदाहरण समाधान किया है। पहला प्रश्न तो यही है कि क्या आत्मा शरीर, बुद्धि, इन्द्रिय, मन आदि के समूह का नाम है या उसका अस्तित्व इन सबसे पृथक् है? इसका सुस्पष्ट उत्तर यही है कि आत्मा इन सबसे पृथक् है और उसका स्वतंत्र अस्तित्व है। प्रत्येक इन्द्रिय का अपना अलग विषय है। जैसे चक्षु का देखना, नासिका का सूँघना, कान का श्रवण करना, जिह्वा का स्वाद लेना और त्वचा का स्पर्श करना; पर व्यावहारिक रूप से हम यह देखते हैं कि हम एक साथ अनेक इन्द्रियों के विषयों का अनुभव करते हैं। उदाहरण के लिए हम आम को आँख से देखते हैं, नासिक से उसकी गन्ध का अनुभव करते हैं, रसना से उसका स्वाद अनुभव करते हैं, आम पक्का है या कच्चा, इसका अनुमान स्पर्शेन्द्रिय से छूकर दबाकर लगाते हैं। एक बार आम को चख लेने के उपरान्त जब व्यक्ति पुनः आम को देखता है या आम शब्द का श्रवणेन्द्रिय से श्रवण करता है तो उसके स्वाद गन्धादि का अनुभव बिना उसे चखे या सूँघे अनुभव करने लगता है, जबकि उसने चक्षु से आम को देखा है या श्रोत्रों से आम शब्द को सुना ही है। प्रत्येक इन्द्रिय अपने–अपने विषय का अनुभव कर सकती है, अन्यान्य इन्द्रियों के विषयों के ज्ञान की सामर्थ्य किसी भी एक इन्द्रियों में नहीं है अतः यह सिद्ध होता है कि सभी ज्ञानेन्द्रियों के विषयों का अनुभवकर्त्ता चैतन्यात्मा ही है, जो इन्द्रियों से पृथक् है और जिसका स्वतंत्र अस्तित्व है। वही आत्मा सुख–दुःख का अनुभव करता है। प्रत्येक इन्द्रियों द्वारा अपने अपने विषयों को ग्रहण करने की व्यवस्था से यह सुस्पष्ट है कि चेतन आत्मा, जो इन सब इन्द्रियों के विषयों को ग्रहण करने की सामर्थ्य से युक्त है, इनसे पृथक है। (तदव्यवस्थानादेवात्म सदभावादप्रतिषेधः – (न्याय , 3–1–3) आत्मा स्वामी है और इन्द्रियाँ उसकी सेवक है, अतः आत्मा और इन्द्रियों में स्वामी–सेवक संबंध है।

– डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया (डी.लिट्),
बी–3/79, जनकपुरी, न.दिल्ली–110058 *क्रमशः*

Questions & Answers

Brahamcharya & Tension

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

Q. : If you say that one should remain brahamcharia upto his marriage then how can he get the knowledge about the reproduction?

- Dr. Harish Arya

Ans.: Nature gives such pious knowledge itself. Secondly, to maintain brahamcharya does not mean that a person should not get knowledge of reproduction. The said knowledge is attained in stipulated time keeping in view the age. Actually, brahamchari knows all about reproduction, that is why, he knows the importance of brahamcharya etc., well. I think I have told you that I have written a book on brahamcharya in Hindi, in which detailed preach to students and family members is given. The book can be sent if you desire, please.

Q.: How can a person reduced his tension? I perform agya chakra and asan pranyam in spite of that i think much more what should I do?

- Dr. Harish Arya

Ans.: Tension is reduced and completely destroyed by eternal knowledge of Vedas, shastras, etc. Secondly, the knowledge is attained first by listening Vedas, shastras, holy books. Secondly whatever has been listened, the same should have been adopted in our daily life. For example- Vedas-shastras, holy books state human life is meant for worshipping God. Vedas define the worship that one should do daily havan, name jaap of God, contact with learned acharyas and hard practice of ashtang yoga philosophy while discharging our moral duties. So until, we listen to eternal knowledge and adopt the same as quoted above, mere asan, pranayam will do nothing, please. Concentration is necessary but it is attained by adopting the above quoted path as said in Vedas. Then only tensions, sickness, problems, sorrows etc., are totally destroyed.

To be continued....

गतांक से आगे :–

देववाणी : संस्कृत

वैदिक वाङ्मये जलसंरक्षणम्

द्वितीयः – प्रदूषितस्य जलस्य शोधनार्थम् उपायाः करणीयाः। प्रथमपक्षः एव ऋषीणां प्रियतम इति भाति तच्च जल–प्रदूषणं भवेत् एव न। सुस्पष्टमेतत् 'पंकस्य क्षालनात् दूरात् अस्पर्शनं वरम्' इति प्राज्ञानां सिद्धान्तः। प्रथमे पक्षेऽपि चिन्तनं द्विविधम् –एकस्तु–जलपदार्थस्य महत्त्वज्ञापनम् जलशक्तीनां बोधनम् तथा च जलतत्त्व–विषये मातृत्वरूपाः शिवत्वरूपादयः भावनाः मानवमनस्तु दृढतमाः करणीयाः येन लोभाभिभूते सत्यपि मानवे जलं प्रदूषितं नत्र कुर्यात्। अपरः साक्षात् जलतत्त्वस्य प्रदूषणरूपि हिंसानिषेधः। ऋषयः मानसिकीं शक्तिं प्रबलतरां स्वीकुर्वन्ति। मनोवैज्ञानिकाः अति इदं तथ्यं प्रमाणीकुर्वन्ति यत् यदि मनसि दृढता अस्ति चेत् बाह्यप्रभावाः वशीकर्तुं समर्थाः न भवन्ति। अतएव वेदेषु सर्वत्र जलस्य कृते उच्चभावाः वर्णिताः सन्ति।

वैदिककोष–निघण्टुमतेन जलजीवनं च शब्दौ समानार्थिनौ। संस्कृतस्य एषा अप्रतिमा विशेषता वर्तते यत् शब्देषु एव तस्य पदार्थस्य महत्त्वं ज्ञातं भवति यथा–जलं इति दोषान् जलति अपवारयति इति, जीवनं–जीवयते प्राणिनः अनेन इति, नीरम्–निश्चयेन राति ददाति सुखम् इति इत्थं प्रकारेण वैदिक कोषे एकोत्तरशतं जल पर्यायवाचिनाम् उल्लेखः निरुक्ते च तेषां व्याख्या प्रापयते। एतासु निरुक्तिषु एकं तथ्यं स्पष्टं भवति यत् जलं तदेव दोषपवारणं करोति, तदेव जीवान् जीवयते, तदेव निश्चयेन सुखम् ददाति यदा निर्मलं हानिरहितं भवेत् अर्थात् जले एताः शक्तयः विद्यन्ते इति ऋषयः प्रमाणयन्ति किन्तु एताभिः शक्तिभिः लाभाः प्राप्तव्याश्चेत् जलं विशुद्ध रक्षणीयम् भवति। वैदिकमन्त्रेषु ऋषीणां विषय–प्रतिपादनशैली काचिद् विशिष्टा भवति। तत्र प्रत्यक्षरूपेण दृश्यमानां प्रार्थना किमपि रहस्यम् अन्तर्धत्ते। यथा–

शन्नः आपो हैमवती शनु ते सन्तूस्स्याः।
शं ते सनिष्यदा आपः शगु ते सन्तु वर्ष्याः।।

– डॉ. बृहस्पति मिश्रः, प्राध्यापक, श्रीशक्ति संस्कृत महाविद्यालयः,
श्री नयनादेवी जी, बिलासपुर (हि.प्र.) क्रमशः

बोध कथा

कबीरा गरब न कीजिए

– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

एक बहुत साधारण, बहुत निर्धन–सा व्यक्ति था। साधारण पढ़ा–लिखा भी था, परन्तु निर्धन था। नौकरी की तलाश में बम्बई पहुँचा। और तो कोई नौकरी मिली नहीं, एक सेठजी के यहाँ झाड़ू देने पर नौकर हो गया। प्रतिदिन प्रातःकाल आता, लम्बी–चौड़ी दुकान में झाड़ू देता। दिन में कई बार सफाई करता और जब भी खाली समय मिलता, कोई–न–कोई किताब लेकर बैठ जाता। पढ़ता भी, लिखता भी। उसका लेख बहुत सुथरा था। सेठ ने एक दिन देखा; बोले–''अरे, तू लिखना जानता है?''

वह बोला–''जी, थोड़ा–बहुत लिख लेता हूँ।''

सेठजी की परिश्रम से खूब बना–सँवारकर चिट्ठियाँ लिखने लगा। उसके लिखने का, विषय को प्रस्तुत करने का ढंग बहुत सुन्दर था। चिट्ठी में हिसाब–किताब की बात आती, तो उसे भी वह खूब अच्छी प्रकार समझा–बुझाकर लिखता।

सेठजी ने एक दिन एक ऐसा ही पत्र देखा; बोले–'–अरे, तू हिसाब–किताब भी जानता है?''

वह बोला–''जी, थोड़ा–बहुत जानता हूँ।''

सेठजी ने उसे मुनीम बना दिया। फिर उसके कार्य से प्रसन्न होकर हैड–मुनीम बना दिया। अब दूसरे मुनीम जलने लगे।

जलने का यह गुण बहुत है हमारे अन्दर। किसी दूसरे व्यक्ति ने तीन मंजिल मकान बना लिया था हम उसे देख–देखकर दिन–रात जलते रहते हैं, बिना आग के जलते रहते हैं। ये मुनीम भी जलने लगे। दूसरी तो कोई बात उन्हें सूझी नहीं, सोचा–सेठजी के कान भरेंगे, इसकी निन्दा करेंगे, तो नये मुनीम की पदवी छिन जायेगी; परन्तु निन्दा करने की कोई बात नहीं मिली। वह सेठ के मकान में रहता था–दो कमरों में। एक कमरा खुला रहता था, एक बन्द। प्रतिदिन जाने से पूर्व वह इस बन्द कमरे में जाता, फिर थोड़ी देर बाद बाहर निकल आता। ताला बन्द करके ताली जेब में रखकर दुकान पर पहुँच जाता और प्रातः से रात्रि तक अपना काम करता रहता।

जलने वालों को ऐसी बात मिली नहीं, जिसे वे सेठजी से कहें। तभी किसी ने उसे दुकान पर आने से पूर्व इस बन्द कमरे में जाते देखा। सन्देह हुआ कि इस कमरे में क्यों जाता है? इसको बन्द क्यों करता है?

– क्रमशः

दीपावली पर्व
(17 अक्तूबर पर) पर विशेष

दीपावली क्यों और कैसे ?

कार्तिक माह की अमावस्या वर्ष की सर्वाधिक अन्धकार पूर्ण अमावश्या मानी जाती है। कारण कि वर्षा ऋतु के बाद वायुमण्डल धूल कणों से नितान्त रहित हो जाता है। निर्मल आकाश की भरपूर चाँदनी हमें मिल ने के कारण दीपावली से पहले आने वाली पूर्णिमा को वर्ष की सबसे उज्ज्वल शीतल और सौम्य पूर्णिमा मानते हैं। दीपावली के सघन अन्धकार को संस्कृत के प्रसिद्ध कवि शूद्रक निम्न शब्दों में प्रकट करते हैं–

"लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नर्भः। असत्पुरुष सेवेव दृष्टिः विफलतां गता।।"

अर्थात् ऐसा लगता है मानो अन्धकार अंगों पर पुत गया हो, आकाश से मानो काजल बरस रहा हो, दृष्टि तो ऐसे निष्फल हो गई है जैसे दुर्जन की सेवा व्यर्थ चली जाती है। अज्ञान, अन्धकार व कालिमा के साथ भारतीय मनीषा का प्रारम्भ से ही संघर्ष होता चला आ रहा है! 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की प्रर्थना इसका प्रमाण है। दीपावली के दीप जलाकर प्रकाश के छोटे–छोटे महारथी पंक्ति बद्ध खड़े होकर अन्धकार को ललकारते हुए मानव की प्रकाश प्रिय प्रवृत्ति का व्यावहारिक परिचय दे रहे होते हैं। हम अज्ञान–अन्धकार से निरन्तर लड़ते रहने के प्रतीक पर्व दीपावली को एक लम्बे समय से पूरी श्रद्धा के साथ मनाते चले आ रहे हैं।

"जब सताता है अन्धेरा, तब मनाते हैं दीवाली। पथ रहे ज्योतित मनुज का, ऋषियों ने यह रीति डाली।।"

दीपावली का जो स्वरूप आज हमारे सामने है, वह अपने मूल स्वरूप से एकदम अलग है। सच में यह दीपावली 'दीप पर्व' न होकर 'यज्ञ–पर्व' है। उसकी चर्चा करने से पहले हमें यह भी सोचना चाहिए कि क्या हम दीपावली को प्रकाश पर्व के रूप में भी उचित रीति से मनाते हैं? क्या हम अपने व्यावहारिक जीवन में प्रकाश अर्थात् ज्ञान का स्वागत करते हैं? बाहरी अन्धकार को दूर करने के लिए दीप जलाना तो एक उपदेश है, एक सन्देश है, ऐक प्रेरणा है–

'बाहरी तम नेत्र को बाधित करे तो बहुत खलता। हृदय के तम से कभी जन्मी है किंचित भी विकलता!!

दीप एक वहाँ भी जला लें छा रही चिर रात काली जब सताता है अन्धेरा।

दीपावली सीख है अन्दर के अज्ञानान्धकार से लड़ने की।

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' से पहले 'असतो मा सद्गमय' की प्रार्थना है – असत्य से सत्य की ओर ले चलने की प्रार्थना है। हृदय में ज्ञान ज्योति के बिना दीपावली का पर्व सच्चे अर्थों में नहीं मनाया जा सकता।

हम संकेत कर चुके हैं कि दीपावली का मूल स्वरुप 'दीप–पर्व' न होकर 'यज्ञ–पर्व' है। यज्ञ हमारी वैदिक संस्कृति का प्राण है। हम कोई भी मंगलमय कार्य करते हैं, हर्ष उल्लास से परिपूर्ण कोई पर्व मनाते है व कोई संस्कार आदि करते हैं तो देव पूजन के रुप में यज्ञ अवश्य करते हैं। यज्ञ का एक अर्थ देव पूजन है। महर्षि याज्ञवल्क्य लिखते है – **'अग्नि वै देवानां मुखम्'** – अग्नि देवताओं का मुख है देवों को खिलाना चाहते हो तो उनके मुख अग्नि में आहुति दो। **'यज्ञो हि देवतानामन्नम्'** (शत 5.1.1.2) अर्थात् आहुति प्रदान करने से ही देवता जीवित रहते हैं। हमने यज्ञ को भुलाकर देवताओं का जीवन खतरे में डाल दिया। हम देव पूजन के नाम पर यज्ञ को छोड़कर सब कुछ करते रहे, उधर यज्ञ के अभाव में देवता अतृप्त ही रहे। **'यज्ञ एवं देवानां आत्मा'** (शत 8.6.1.10) यज्ञ ही देवों का आत्मा है। हमने यज्ञ करना छोड़कर देवताओं के आत्मा को उनसे अलग कर दिया– देवत्त्व के आत्माहीन करके हमने अपना ही नुकसान किया है। देवत्त्व के मर जाने पर असुरता का राज्य हो जाता है। आज चारों ओर असुरता का ताण्डव हो रहा है।

हम विचार कर रहे थे कि दीपावली एक यज्ञ–पर्व है। वैसे तो सभी पर्व यज्ञ पूर्वक ही मनाये जाते है, लेकिन दीपावली को यज्ञ–पर्व कहने का एक महत्त्वपूर्ण कारण है। हमारे तत्त्ववेत्ता ऋषियों ने इस पर्व को नाम दिया है **"शारदीय नवान्न शस्येष्टि"** अर्थात् शरदऋतु में आने वाले नए अन्न से यज्ञ करना। कितनी ऊँची सोच थी हमारे ऋषियों की। फसल पककर तैयार है। अभी घर में नहीं आई –खेतों में है, उसे घर में लाने से पहले यज्ञ करके देवताओं को खिलाओ। हमारे अन्न को हम सर्वप्रथम यज्ञ करके देवताओं का अन्न बनाते हैं। देवताओं को खिलाते हैं। कितना ऊँचा आदर्श है। 'त्वदीय वस्तु सर्वात्मन् तुभ्यमेव समर्पये' – हे देवाधि देव तेरी दी हुई वस्तु हम पूरी श्रद्धा के साथ तुझे समर्पित करते हैं। वेद कहता है **'त्वे इत् हूयते हवि'** (ऋ. 1.26.3) हे परमात्मा ! तेरे लिए ही हम यह हवि (आहुति) समर्पित करतें है कैसी कल्याणकारी व्यवस्था है? कैसा महान् चिन्तन है? कैसी पावन जीवन शैली है। क्या विडम्बना है कि हमने सब कुछ भुला दिया। हमारे ऋषियों ने लिखा है 'तैः दत्तान अप्रदायेश्यो यो भुक्ते स्तेन एवं सः' । देवों की कृपा से प्राप्त वस्तुओं को उन्हें दिये बिना जो भोगता है – वह चोर है, सोचिए! हमारा जीवन क्या बन गया है? हम यज्ञ न करके कितने अपराधी हो गए हैं? गीता में श्री कृष्ण कहते हैं – **'न अयं लोको अस्ति अयज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम"** (4.31) यज्ञ न करने वालों के लिए तो यह लोक भी सुखद नहीं है, अगले (परलोक की तो बात ही क्या? श्री कृष्ण का यह कथन हमारे वर्तमान पर कितना सटीक बैठता है। हम यज्ञ छोड़ देने, अयाज्ञिक बन जाने के कारण जीवन के हर क्षेत्र में दुःख दुविधा और कष्ट क्लेश भोग रहे हैं। दीपावली का प्राचीन स्वरूप 'शारदीय नवान्न शस्येष्टि' हम सबके लिए एक सन्देश है, एक प्रेरणा है कि हम यज्ञशील बनें, हम अपने खाद्यान्न को घर में लाने से पहले देवों के लिए अर्पित करें। यज्ञ के माध्यम से नवागत अन्न को देवताओं को अर्पित कर देने से शेष अन्न 'यज्ञ शेष' बन जाता है, प्रसाद बन जाता हैं ऐसा यज्ञ शेष खाने वाले परमात्मा को प्राप्त कर लेते हैं।

यज्ञ शिष्ट मृतं भुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्' (जी. 4.31)

दीपावली को लक्ष्मी पूजन का प्रचलन भी है। लक्ष्मी की सच्ची पूजा तो लक्ष्मी को यज्ञ के माध्यम से लोक हित में लगाना है। वेदों में पत्नी के अनुगामिनी कहा है। 'पत्युरनुवताभूत्वा' तथा 'प्रमेपतियानः पन्था' से स्पष्ट है कि पत्नी पति के पीछे चलती है। विष्णु रूप यज्ञ की पत्नी रूपी लक्ष्मी वहाँ कैसे रह सकती है, जहाँ यज्ञ न हो? यज्ञशील परिवार यज्ञीय भावनाओं से परिपूर्ण समाज व राष्ट्र कभी लक्ष्मी से हीन नहीं रह सकता। यज्ञ पति के साथ लक्ष्मी रूपी समृद्धि अवश्य ही रहती है। जब भारत ऋषियों का देश था, मुनियों की तपःस्थली थी, यहाँ अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त यज्ञ निरन्तर होते थे, तो इसका नाम सोने की चिड़िया था। तब हम लक्ष्मी के पति थे, दुर्भाग्य से आज हम लक्ष्मी के वाहन बनकर रह गए हैं। सच्चाई के प्रकाश से आँखे चुराना सत्य को न देख पाना हमार स्वभाव बन गया है।

दीपावली फिर आ रही है, हर वर्ष आती रहेगी, हम उसे मनाना कब सीखेगें? क्या हमारे ऋषि–महर्षियों की बातों पर हमें भरोसा नहीं रहा? क्या ईश्वर के वेद ज्ञान के प्रति हमारे हृदयों में श्रद्धा नहीं रही? क्या दीप जलाकर मिठाई खाकर, पटाखे फोड़कर, फुल–झड़ियाँ छोड़कर दीपावली मनाना हमारे जीवन में कोई निखार ला देता है? आओ दीपावली को ऋषियों की बनाई विधि के अनुसार – 'यज्ञ –पर्व के रुप में मनाएँ – शारदीय नवान्नशस्येष्टि' के रूप में मनाएँ । क्या हम एक अच्छी शुरुआत भी नहीं कर सकते? यदि हाँ तो संकल्प ले कि हम लक्ष्मी पूजन और दीपावली के समस्त श्रेष्ठ भावों को हृदय में बसाकर इस दीपपर्व को यज्ञपर्व के रूप में ही मनाएँगे।

– रामनिवास 'गणग्राहक'
दिल्ली

ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय-तृतीय पाद (1)

न वियदश्रुतेः ।। १।।

अर्थ – (न) नहीं (उत्पन्न नही होता है) (वियत्) आकाश (अश्रुतेः) श्रुति (वेदों में ऐसा उल्लेख न होने से।

भावार्थ – छान्दोग्य उपनिषद् (६/२/३–४, ६/३/२–४) में सृष्टि उत्पत्ति के प्रसंग में सबसे पहले तेज या अग्नि की उत्पत्ति का वर्णन है, आकाश का नहीं। इसके बाद जल और अन्न की उत्पत्ति का उल्लेख नहीं है। वहाँ भी आकाश की उत्पत्ति का कोई उल्लेख नहीं है। इसी प्रकार ऐतरेय उपनिषद् (१/१०२) में कहा है –

"स इमाँल्लोकानसृजत।
अम्मौ मरीचीर्मरमापः"।।

अर्थात् उसने इन लोकों की रचना की अम्मस्, मरीची, मर, आपस्। यहाँ जो द्युलोक से परे है वह अम्मस् है, अन्तरिक्ष मरीचि है। पृथ्वी लोक मर और आपस्–जल है। यहाँ भी सृष्टि की रचना में आकाश के नाम का उल्लेख नहीं है। यदि आकाश उत्पन्न हुआ होता तो उसका उपनिषद के ऊपर दिए प्रसंगों में उल्लेख हुआ होता। ऐसा न होने से निश्चय होता है कि आकाश की उत्पत्ति नहीं होती।

विषय को ठीक से न समझने के कारण शिष्य कहता है कि तैत्तिरीय और मुंडक उपनिषद् (२/१/३) में कहा है कि आकाश की उत्पत्ति होती है। सूत्रकार शिष्य की शंका को ही अगले सूत्र में प्रस्तुत करते हैं।

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'
सी–2ए/90 जनकपुरी,नई दिल्ली–58

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष के अवसर पर
महाराष्ट्र प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं
आर्यसमाज सम्भाजीनगर के तत्त्वावधान में

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

एवं अखिल भारतीय सस्वर वेदपाठी सम्मान समारोह

30 अक्तूबर से 1 नवम्बर, 2009

स्थान : सरस्वती भुवन, संभाजीपेठ, सम्भाजीनगर, औरंगाबाद(महा.)

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा सम्मेलन को सफल बनाने में अपना योगदान देवें।

–: निवेदक :–

स्वामी श्रद्धानन्द	दयाराम बसैये	आचार्य शिवमुनि
प्रधान	संयोजक (09422212045)	मन्त्री

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

4 दिसम्बर से 6 दिसम्बर, 2009

स्थान : घनश्याम सिंह आर्य कन्या महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा सम्मेलन को सफल बनाने में अपना योगदान देवें।

–: निवेदक :–

आचार्य दयासागर	दीनानाथ वर्मा	अरुण खोसला
प्रधान	मन्त्री	कार्यालय मन्त्री

126वां महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाणोत्सव समारोह

सभा के स्टाल पर उपलब्ध

वैदिक साहित्य, प्रचार सामग्री एवं सेवाएं

क्र.सं.	नाम वस्तु	मूल्य
1.	ओ३म् ध्वज (छोटा)	10/–
2.	ओ३म् ध्वज (मध्यम)	20/–
3.	ओ३म् ध्वज (बड़ा)	50/–
4.	ओ३म् ध्वज (फैंसी – छोटा)	50/–
5.	ओ३म् ध्वज (फैंसी – बड़ा)	100/–
6.	दैनिक यज्ञ गुटका	400/– सैकड़ा
7.	घड़ी (सुपर)	100/–
8.	घड़ी (बड़ी)	100/–
9.	घड़ी (छोटी)	75/–
10.	लाइट आफ टूथ (अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश)	250/–
11.	सत्यार्थ प्रकाश	25/–
12.	सत्यार्थ प्रकाश (सजिल्द)	50/–
13.	श्रीमद्‌दयानन्द प्रकाश	125/–
14.	चांदी के सिक्के (10ग्रा.)	बाजार रेट पर
15.	सत्य की राह (वीसीडी)	25/–
16.	सत्यार्थ प्रकाश (डीवीडी)	15/–
17.	ऋषि गाथा (सीडी)	25/–
18.	गुरुदेव दयानन्द (सीडी)	20/–
19.	महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड चित्र (बड़ा साइज)	5500/–
20.	महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड चित्र (मध्यम)	2500/–
21.	महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड चित्र (छोटा)	1000/–
22.	महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड चित्र (10″ ×12″)	350/–
23.	महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड चित्र (10″ ×12″)	250/–
24.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेटिड चित्र (बड़ा)	125/–
25.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेटिड चित्र (8″×10″)	40/–
26.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेटिड चित्र (5″×7″)	20/–
27.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेटिड चित्र (3″×5″)	15/–
28.	नेम स्लिप्स (18×1)	5/–
29.	शगुन लिफाफे	200/– सैकड़ा
30.	स्टीकर (125 निर्वाण वर्ष)	300/– सैकड़ा
31.	स्कूटर स्टेपनी कवर	10/–
32.	125वां निर्वाण वर्ष बैनर	10/–
33.	ओ३म् स्टीकर (छोटा)	150/– सैकड़ा
34.	ओ३म् स्टीकर (बड़ा)	5/–
35.	गायत्री मन्त्र स्टीकर	50/–
36.	वेद ईश्वरीय ज्ञान (लघु ट्रैक्ट)	250/– सैकड़ा
37.	आर्योद्देश्य रत्नमाला (लघु ट्रैक्ट)	250/– सैकड़ा
38.	यज्ञोपवीत	25/– सैकड़ा
39.	वेदों का सैट (14 खंडों में)	1500/–
40.	वेदों का सैट (अंग्रेजी) (22 खंडों में)	2000/–
41.	वेदों का सैट (4 खंडों में)	1500/–
42.	वेदों का सैट (9 खंडों में)	2500/–
43.	एम.डी.एच. हवन सामग्री (5किलो)	250/–
45.	एम.डी.एच. हवन सामग्री (10किलो)	490/–
46.	एम.डी.एच. हवन सामग्री (20किलो)	960/–
47.	आर्यसन्देश साप्ताहिक (वार्षिक शुल्क)	150/–
48.	आर्यसन्देश साप्ताहिक (आजीवन– केवल दीपावली के दिन)	500/–

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में सभा के प्रचार स्टाल पर पधारें और उपलब्ध सेवाओं का लाभ उठाएं।

– विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441

दीपावली का वैज्ञानिक पक्ष

मनुष्य मात्र में यह मौलिक प्रवृत्ति है कि वह नित्य प्रति जो कार्य/व्यवसाय करता है उससे कभी–कभी विश्राम तथा हृदयोल्लास का कार्य करे। वस्तुतः आनन्द का पूर्ण प्रकाश मानव जीवन में ही होता है, मनुष्य ही आनन्दमय कोष का अधिकारी है। पर्व या उत्सव पर इस हार्दिक आनन्द के विकास का यथार्थ अवसर मिलता है। यही कारण है कि भारतवर्ष में पर्व/उत्सव मनाने की सदियों पुरानी परम्परा है। पर्व मनाने के साथ ही सर्वसाधारण के मनोनंजन को ध्यान में रखकर हम दीपावली की विशेष चर्चा करेंगे।

वर्षा के बीतने और शीतकाल के प्रारम्भ होने पर जनता को कुछ विशेष तैयारियाँ करनी पड़ती हैं। वर्षा ऋतु के वृष्टि बाहुल्य से वायुमंडल तथा घर–बार विकृत, मलिन व दुर्गन्धित हो जाते हैं। वर्षा ऋतु के अन्त में उनकी शुद्धि और स्वच्छता की आवश्यकता होती है। घर–बाहर की स्वच्छता लिपाई–पुताई से की जाती है। शीत निवारण के लिए गरम वस्त्रों का प्रबन्ध करना होता है। इसी समय चावल (धान) की फसल का आगमन होता है। किसान के आनन्द की सीमा नहीं होती है। उनके घर धन–धन्य–धान, मूँग, बाजरा, मक्का, तिल और कपास से भरपूर होते हैं।

नई फसल (तथा अन्न) का स्वागत करने के लिए कार्तिक मास की अमावस्या की तिथि प्राचीनकाल से नियत चली आ रही है। उसको दीपावली भी कहते हैं। जैस शरद पूर्णिमा की चाँदनी वर्ष भर की बारह पूर्णिमाओं में सर्वोत्कृष्ट होती है, उसी प्रकार कार्तिक अमावस्या का अंधकार वर्ष भर की बारह अमावस्याओं में सघनतम् होता है। ऐसी घनी अंधियारी में नवीन फसल के आगमन से प्रमुदित कृषि प्रधान भारतवर्ष में वर्ष की प्रथम उक्त सस्य (फसल) के स्वागत के लिए दीपमाला का उत्सव मनाया जाता है। दीपमाला से गृहों की वर्षाकालीन आद्रता (Humidity) से उनके संशोधन में सहायता होती है। इस दिन राजप्रसाद से लेकर रंक कुटी तक की शोभा अपूर्व होती है। सरसों के तेल से दीपमाला (छोटे–छोटे दीपों) की मानों होड़ लग जाती है। इस अवसर पर तरह–तरह के मिष्ठान्नों तथा खीलों–खिलौनों का आदान–प्रदान किया जाता है। इस अवसर पर घरों को आवास योग्य बनाना स्वाभाविक और समुचित ही था, यही लक्ष्मी की पूजा थी।

दीपावली के विषय में एक कल्पित कथा चल पड़ी है कि इस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र वनवास से लौटकर अपनी राजधानी अयोध्या में वापस आये थे और उनकी प्रजा ने उस हर्षोल्लास के उपलक्ष्य में दीपावली की थी। तभी से वर्तमान तक दीपावली चली आ रही है–यह विचार कपोल कल्पित है क्योंकि श्री रामचन्द्र जी रावणवध और श्री लंका विजयान्तर के तत्काल बाद ही अयोध्या लौट आये थे। प्रतीत होता है कि दीपावली की दीपमाला के प्रकाश से श्री रामचन्द्र के प्रत्यागमन के हर्षोल्लास की कल्पना सही नहीं है। संभव है यह दन्तकथा सर्वसाधारण में प्रचलित हो गई हो।

सभी भारतीयों का कर्त्तव्य है कि कल्पनाओं का विचार न करें और नई फसल, गृह संशोधन ही दीपावली का मुख्य उद्देश्य है, यही प्रचार करें। भारत कृषि प्रधान के आगमन, वर्षा ऋतु के बाद घरों की सफाई, यही त्योहार का वैज्ञानिक पक्ष है।

– वेदमित्र आर्य, से.नि. शिक्षाधिकारी, दिल्ली शिक्षा निदेशालय

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारी ध्यान दें!

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में विभिन्न सम्मानों हेतु दिल्ली के

आर्यसमाजों/गुरुकुलों/आर्यवीर दल/वीरांगना दल/शिक्षण संस्थाओं से नाम भेजें

दिल्ली में आयोजित क्षेत्रीय बैठकों में दिए गए विभिन्न आधारों पर दिए जाने वाले सम्मानों के लिए अपनी आर्यसमाज से नाम यथाशीघ्र, **'संयोजक'** के नाम **'125वां निर्वाण वर्ष सम्मान चयन समिति, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1, दूरभाष – 011–23360150, 23365959, 23343737'** के पते पर भेजें। अधिक जानकारी के लिए समिति कार्यालय के उपरोक्त नम्बरें पर सम्पर्क करें।

– विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

गुरु–शिष्य के प्रथम मिलन के 150वें वर्ष पर

6, 7, 8 नवम्बर, 2009 : मथुरा

उद्‌घाटन : 6 नवम्बर, 2009 प्रातः 10 बजे

मुख्य अतिथि : महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटील

महर्षि दयानन्द सरस्वती को जब 13 वर्षों तक भारतवर्ष के विभिन्न दुर्गम तीर्थस्थलों में भ्रमण करते रहे, परन्तु सच्चे शिव के दर्शन करवाने वाला योग्य गुरु नहीं मिला। तब अन्त में 4 नवम्बर बुधवार (कार्तिक शुक्ल 2) सन् 1860 को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पावन नगरी मथुरा में वेद और व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान् प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी गुरु विरजानन्द सरस्वती की कुटिया का द्वार खटखटाया और श्रीचरणों में रहकर शिक्षा–दीक्षा प्राप्त की। उन महान् गुरु और महान् शिष्य के प्रथम मिलन के150वें वर्ष के उपलक्ष्य में 6, 7, 8 नवम्बर, 2009 को मथुरा में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन किया जा रहा है। 8 नवम्बर को महासम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी रामदेव जी करेंगे। **आर्यजन अभी से तैयारियां आरम्भ करें और अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर प्रथम मिलन के 150वें वर्ष को एक यादगार के रूप में अपने हृदयों में अंकित करें।**

आयोजक :– गुरु विरजानन्द ट्रस्ट, वेद मन्दिर, मसानी चौक, मथुरा (उ.प्र.)

Email : virjanandtrust@yahoo.in, virjanandtrust@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : मथुरा

6, 7, 8 नवम्बर, 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से

आर्यजनों के लिए बस व्यवस्था

दिल्ली एवं आसपास के आर्यजनों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में मथुरा आर्य महासम्मेलन में सम्मिलित करने हेतु सभा की ओर से 2×2 डीलक्स बसों की व्यवस्था की गई है। सभा के नेतृत्व में जाने वाले आर्यजनों के लिए आना–जाना, आवास (दो लोगों के लिए एक कमरा), आगरा भ्रमण, भोजन एवं शोभायात्रा के समय टी–शर्ट/दुपट्टा, झण्डे आदि की व्यवस्था होगी। **किराया 1600/– रु. प्रति व्यक्ति है।** जाने के इच्छुक आर्यजन क्षेत्रानुसार संयोजक से सम्पर्क करें –

क्षेत्रीय संयोजक : जनकपुरी – श्री शिवकुमार मदान (9310474979), **विकासपुरी** – श्री ललित चौधरी (9818371375), **पंजाबी बाग** – श्री राजीव आर्य (9212209044), **रानी बाग** – श्री जोगेन्द्र खट्टर (9899478780), **प्रशान्त विहार** – श्री दुर्गा प्रसाद आर्य (9899252852), **रोहिणी** – श्री सुरेन्द्र आर्य (9811476663), **औचन्दी** – श्री महेन्द्र सिंह (9999148483), **महरौली** – श्री एस.पी.सिंह (9868111709), **गोविन्दपुरी** – श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (011–20500724), **विवेक विहार** – श्री गजेन्द्र सिंह सक्सेना (9899196439), **दयानन्द विहार** – श्री ईश नारंग (9911160975), **कृष्णा नगर** – श्री जगदीश मल्होत्रा (9013013802)।

यात्रा संयोजक : श्री सतीश चड्डा (011–20013123)

–: निवेदक:–

ब्र. राजसिंह आर्य	**विनय आर्य**	**सोमदत्त महाजन**
प्रधान (9350077858)	महामन्त्री (9958174441)	उप प्रधान (25551587)

दिल्ली स्थित आर्यसमाज एवं आर्य संस्थाओं के इतिहास लेखन संस्थाओं की जानकारियां भेजें

1. अपनी आर्यसमाज की स्थापना के सम्बन्ध में 10–15 पंक्तियां लिखें जिसमें उस समय के क्षेत्र की परिस्थितियां, किन के घर से आरम्भ हुआ, किन्होंने किया, आदि का भी उल्लेख हो।
2. आर्यसमाज के स्थापना की तिथि, संस्थापकों के नाम एवं परिचय सहित – यथासम्भव रिकार्ड के अनुसार हो तो बेहतर है।
3. आर्यसमाज के वर्तमान भवन के वृहद् तीन–चार चित्र अलग–अलग कोण से खींचकर भेजें जिसमें आर्यसमाज का नामपट्ट लिखा हिस्सा आ जाए, तो बेहतर है। (चित्र सीडी में भी भेजें)
4. आर्यसमाज द्वारा वर्तमान में संचालित समस्त गतिविधियों की जानकारी।
5. स्थापना से अब तक किए गए मुख्य कार्यों का विवरण।
6. वर्तमान के तीन पदाधिकारियों (प्रधान, मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष) के नाम व फोटोग्राफ एवं महिला आर्यसमाज के भी उपरोक्त तीन पदाधिकारियों के फोटोग्राफ। (फोटो सीडी में भी भेजें) प्रत्येक फोटोग्राफ के पीछे उनका नाम अवश्य लिखा हो।
7. स्थापना काल से अब तक रहे अधिकारियों की सूची कार्यकाल सहित (यदि सम्भव हो तो)
8. वे कार्य जिनसे आपकी आर्यसमाज ने विशेषता प्राप्त की हों।
9. यदि कोई महान् व्यक्तित्व आपकी आर्यसमाज से सम्बन्धित रहे हों तो उनका विवरण परिचय अवश्य दें।
10. आर्यसमाज से सम्बन्धित कोई ऐसा ऐतिहासिक दस्तावेज जिसकी फोटोप्रति छापना इतिहास की दृष्टि से आप उत्तम समझें तो उसकी साफ कॉपी करके अवश्य भेजें।

नोट: इन सबके अतिरिक्त अपनी आर्यसमाज के बारे में कुछ विशेष जानकारी अथवा टिप्पणी देना चाहें तो उसे भी अलग से अवश्य ही दे देवें।

विशेष नोट:

1. इतिहास ग्रन्थ में प्रत्येक आर्यसमाज के विवरण के लिए दो पृष्ठ आरक्षित होंगे। जिसमें आधे पृष्ठ पर फोटो तथा शेष डेढ़ पृष्ठ पर आर्यसमाज का उपरोक्त वर्णन सम्पादित कर विवरण प्रकाशित किया जाएगा।
2. यदि समाज 50 वर्ष से अधिक पुराना है, वह चाहे तो अतिरिक्त शुल्क 750/– रुपये देकर तीसरा पृष्ठ भी ले सकते हैं।
3. ग्रन्थ का आकार 20×30×8 होगा। फोटो रंगीन प्रकाशित होंगे। इतिहास लेखन समिति ने प्रत्येक आर्यसमाज को 1000/– रुपये प्रति पृष्ठ की दर से शुल्क निर्धारित किया है। यह ग्रन्थ लगभग 700–800 पृष्ठों का होगा तथा दो भागों में प्रकाशित होगा। दोनों भागों का अनुमानित मूल्य 250/– रुपये होगा। यह ग्रन्थ आर्यसमाजों के इतिहास लेखन की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।
4. इस ग्रन्थ में जानकारी भेजने वाली प्रत्येक आर्यसमाज/संस्था को ग्रन्थ की 5 प्रतियां निःशुल्क दी जाएंगी।
5. अपने पत्र एवं जानकारियां **'संयोजक, दिल्ली की आर्यसमाज इतिहास लेखन समिति'** – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001 के पते पर शीघ्रातिशीघ्र 31 दिसम्बर से पूर्व भेज देवें।

– ब्र. राजसिंह आर्य, प्रधान (9350077858)
विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रस्तुत हैं

वर्ष 2010 के कैलेण्डर

बढ़िया 130ग्रा. आर्ट पेपर पर

20×30 एवं 14×30 इंच के आकारों में

मूल्य 850/–रु. एवं 750/–रुपये सैंकड़ा

आज ही अपने आर्डर बुक कराएं

नोट : केवल दीपावली तक ही आर्डर बुक किए जाएंगे। अपनी प्रतियां बुक कराने के लिए 50 प्रतिशत राशि अग्रिम भेजें। 250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (50/– सैकड़ा) पर उपलब्ध है।

–: सम्पर्क करें :–

व्यवस्थापक, साहित्य प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–111001
दूरभाष : 011–23360150, 23365959 फैक्स : 011–23343737

वैवाहिक विज्ञापन – विशेष सूचना

महर्षि दयानन्द जी की यह दृढ़ मान्यता है कि विवाह हमेशा सदृश अर्थात् परस्पर समान गुण, कर्म, स्वभाव वालों का ही होना चाहिए। क्योंकि ऐसे विवाह से ही कुल में प्रसन्नता रहती है और उसी कुल में आनन्द, लक्ष्मी और कीर्ति निवास करती है।

आज हमारे पारिवारिक अशान्ति, कलह, दु:ख और वैमनस्य का मूल कारण महर्षि के इस वचन का पालन न करना ही है। महर्षि ने तो मनु के प्रमाण से बलपूर्वक यहाँ तक कह दिया कि "चाहे लड़का–लड़की मरणपर्यन्त कुमार (अविवाहित) रहें परन्तु असदृश अर्थात् परस्पर विरुद्ध गुण, कर्म, स्वभाववालों का विवाह कभी न होना चाहिए।"

अतः सुख, शान्ति प्रसन्नता और आनन्द चाहने वालों का परम कर्तव्य है कि वे ऋषियों के निर्देश का पालन करते हुए गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार परस्पर विवाह रचायें।

इधर काफी दिनों से देश विदेश के कतिपय आर्य परिवारों की यह मांग रही है कि आर्य संदेश में वैवाहिक विज्ञापन का स्थायी स्तंभ प्रारंभ किया जाये, जिससे कि आर्य परिवारों को श्रेष्ठ, सुशील, निर्व्यसनी शाकाहारी, धार्मिक वर अथवा वधु के चयन में अत्यन्त सुगमता हो। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अब 'आर्यसन्देश' में वैवाहिक विज्ञापन सेवा प्रारंभ की जा रही है। सभी आर्य जनों से निवेदन है कि इस सेवा का लाभ उठाकर अपने सुखमय परिवार की आधार शिला बनावें।

ध्यान दें :– 'आर्य सन्देश' में अपने वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशित करने के लिए विज्ञापन में 'जाति बन्धन नहीं', और 'आर्य वर/आर्य कन्या की आवश्यकता है' ऐसा देना अनिवार्य है। एक अंक के लिए निर्धारित विज्ञापन शुल्क 150/–, दो अंक के लिए 200 तथा लगातार तीन अंकों के लिए 300/– रुपये देय होगा।

– सम्पादक

आर्य वधु चाहिए

वर – क्षत्रिय, गौर वर्ण, स्वस्थ, सुन्दर, कद 5 फुट 7 इंच, जन्म 24–8–1980; कनाडा से कम्प्यूटर इंजीनियर, कनाडा में सर्विस हेतु एम. सी.ए., एम.बी.ए. कन्या चाहिए। जाति बंधन रहित। सम्पर्क करें–

– मेघश्याम आर्य

आर्यसमाज लाजपत नगर, सैकेण्ड, नई दिल्ली – 110024

09811169005, 011–29814876

आर्य वर चाहिए

Professional Match for Delhi Based Senior Resident Doctor in Govt. Hospital (MBBS, DNB - Pathology) 163 cms / Nov. 1980, Beautiful & Fair Complexion, T.T./ Vegetarian. Well Reputed, Educated Punjabi Arora Arya Family. **Contact:-**

Mo. 09811763833, 0120-4218740, Email : drusd5@gmail.com

उपयुक्त वधु चाहिए

Caring, working bride for fair, handsome, hearing impaired Artist & Graphic Designer (Bisa Agarwal, 29 years, 5'5") from a highly reputed, cultured and well-connected family living in a posh south Delhi colony. Boy wears digital hearing aids, can converse in Hindi & English and drives a car/motorcycle. Girl should not be hearing impaired. Caste is no bar. **Contact : 09211501545**

आर्य वर चाहिए

आर्य परिवार की कन्या आयु 24 वर्ष, कद 5 फुट, रंग गोरा, शिक्षा एम. ए. (संस्कृत), डिप्लोमा इन योगसाइंस, जे.बी.टी., ब्यूटी पार्लर व सिलाई में दक्ष, के लिए सुयोग्य वर की आवश्यकता है, जो कार्यरत हो अथवा अपना निजी कारोबार हो। जातिबन्धन नहीं। दिल्ली स्थित इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें

– ब्रह्म प्रकाश यादव, मो. 9210742156, 9350502175

सत्यार्थप्रकाश सम्बन्धी परीक्षाएं दें

ऋषि दयानन्दकृत सर्वोत्तम ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' के पठन–पाठन से जहाँ धर्म का सच्चा स्वरूप विदित होता है और नाना मत–मतान्तरों की वेद विरुद्ध मान्यताओं का पता लगता है, वहाँ अन्य अंधविश्वासों से भी छूटने का सही रास्ता दृष्टिगोचर होता है। इसीलिए आर्य युवक परिषद्, दिल्ली ने गत 47 वर्षों की भाँति इस वर्ष भी अक्टूबर माह के अन्तिम रविवार को अखिल भारत स्तर पर सत्यार्थप्रकाश सम्बन्धी चार प्रकार की परीक्षाओं का आयोजन किया है। ये परीक्षाएँ सत्यार्थ–रत्न, सत्यार्थ–भूषण, सत्यार्थविशारद व सत्यार्थ शास्त्री हैं।

इन परीक्षाओं में अधिक से अधिक संख्या में परीक्षार्थियों को बैठाने की प्रेरणा देकर नई पीढ़ी को राष्ट्र–प्रेमी धर्मावलंबी और देश के सुयोग्य नागरिक बनने का अवसर प्रदान करें। विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें–

ओम प्रकाश, मंत्री, आर्य युवक परिषद् दिल्ली

एच–64, अशोक विहार, फेज–1, दिल्ली–110052

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

'एक शाम शहीदों के नाम' सम्पन्न

आर्य वीर दल (दिल्ली प्रदेश) के तत्वावधान में **'एक शाम शहीदों के नाम'** कार्यक्रम का आयोजन 2 अक्टूबर 2009 को सायं 3.00 बजे आर्य समाज मिण्टो रोड पर हुआ। कार्यक्रम का प्रारम्भ श्री हरिप्रसाद आर्य (यज्ञ ब्रह्मा) के द्वारा यज्ञ से किया गया। यजमान के रूप में श्री असीम आर्य, श्री अरुण प्रकाश वर्मा एवं श्री सत्यपाल भाटिया धर्मपत्नी सहित उपस्थित थे।

कार्यक्रम का उद्घाटन **श्री बलदेव राज सेठ** व उनके पौत्र **कनिष्क सेठ** ने ध्वजारोहण से किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप जगदीश राज मल्होत्रा (प्रधान आर्यसमाज कृष्ण नगर), एवं विशेष आमंत्रित अतिथि के रूप में श्री धर्मपाल आर्य (प्रधान–आ.के.स.), श्री विनय आर्य (महामन्त्री–दि.आ.प्र.स.), श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी (प्रधान–आर्य समाज हनुमान रोड), श्री रामजीलाल आर्य जी (संरक्षक–आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश) उपस्थित थे।

यज्ञ के उपरान्त विधिवत् रूप से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। दिल्ली की विभिन्न शाखाओं से आये आर्यवीरों एवं आर्य वीरांगनाओं ने देश एवं समाज से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विविधतापूर्ण कार्यक्रम प्रस्तुत किये। जहाँ एक ओर नांगलोई और पहाड़गंज से आये हुए आर्यवीरों ने कश्मीर और कारगिल पर 'वीर रस' की कविताओं के द्वारा उपस्थित प्रत्येक श्रोता से जोश एवं क्रान्ति का संचार किया, वहीं नांगल, विकासपुरी एवं जनकपुरी से उपस्थित आर्यवीरों ने विविध देशभक्ति गीतों से सभी को भावविभोर कर दिया। आर्य वीरांगनाओं ने भी कार्यक्रम में अति उत्साह से भाग लिया। आर्य वीरांगना दल की शिक्षिका संगीता आर्या ने अपने ओजस्वी उद्बोधन के माध्यम से उपस्थित जनसमूह को देश के सम्मुख खड़ी विकट समस्याओं पर सोचने को विवश कर दिया। वहीं दूसरी ओर जहाँगीरपुरी, मिण्टो रोड़, यमुना विहार, से उपस्थित आर्य वीरांगनाओं ने अपने मधुर गीतों के माध्यम से सभी को मंत्रामुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम में विशेष आकर्षण के रूप में नांगलराय शाखा द्वारा पर्यावरण सरंक्षण पर प्रस्तुत की गयी नाटिका को अभूतपूर्व सराहना प्राप्त हुयी। इस नाटिका के समायोजन में श्री मधुसूदन आर्य ने कठिन परिश्रम करते हुए आर्यवीरों को तैयार करने में विशेष भूमिका निभाई। दूसरी ओर आर्य समाज लक्ष्मी नगर, शकरपुर, प्रीत विहार, दयानन्द विहार, के आर्यवीरों ने सम्मिलित रूप से क्रान्तिकारियों के जीवन पर आधरित एक लघु नाटिका प्रस्तुत कर सभी में क्रान्तिमय भावना का संचार कर दिया। अन्ततः इस कार्यक्रम हेतु आर्यवीरों एवं आर्य वीरांगनाओं द्वारा किया गया कठिन परिश्रम रंग लाया तथा इनके द्वारा प्रस्तुत उत्कृष्ट कार्यक्रमों की सराहना करते हुए लोगों ने अपार हर्ष दिखाया।

सभी शिक्षकों, कार्यकर्त्ताओं एवं अधिकारियों के अतुलनीय सहयोग के द्वारा कार्यक्रम अत्यन्त भावपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। श्री वीरेन्द्र आर्य (संचालक–आ.वी.द. दिल्ली प्रदेश), ने कार्यक्रम के अन्त में सभी अतिथि महानुभावों व कार्यकर्त्ताओं का आभार प्रकट किया।

कार्यक्रम के पश्चात् रात्रि भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गयी थी।

– सुन्दर आर्य, महामंत्री

संन्यास दीक्षा ली

दिनांक 16 अगस्त, 2009 को स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक रोजड़ के सान्निध्य में श्री राममुनि वानप्रस्थी बहादुरगढ़ ने एक भव्य समारोह के बीच आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में संन्यास दीक्षा प्राप्त की। इस अवसर पर स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी एवं अन्य संन्यासी तथा विद्वान उपस्थित थे। जिसमें सैकड़ों लोगों ने उत्साह के साथ भाग लिया। उनका नाम राममुनि वानप्रस्थी से परिवर्तित कर स्वामी रामानन्द सरस्वती रखा।

– साभार : आत्मशुद्धि पथ

आर्ष कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर का

42वां वार्षिकोत्सव

10अक्तूबर, 09, शनिवार

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– शशिप्रभा आर्या, महामन्त्री

आर्यसमाज भीमगंज मण्डी, कोटा का

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज, भीमगंज मण्डी, कोटा जंक्शन (राजस्थान) का वेद प्रचार सप्ताह दिनांक 14 से 20 सितम्बर, 09 तक समारोह पूर्वक बनाया गया। संयोजक श्री राजेन्द्र आर्य ने बताया कि इसमें आचार्य अखिलेश्वर जी, ऊधमपुर द्वारा नित्य यज्ञ सम्पन्न हुआ व वेद कथा की गई। आचार्य जी ने बताया कि जैसे द्वापर में भगवान कृष्ण वंशी वाले थे उसी प्रकार कालि काल में देव दयानन्द वेद की वीणा लेकर आये और नारा दिया वेदों की ओर लौटो।

आचार्य जी ने 19–09–09 को श्री राजेन्द्रआर्य के पोल 'नैतिक' का 'अन्न प्राशन' संस्कार करवाया तथ जनसमूह को यज्ञ का महत्व बताया सभी श्रोताओं में यज्ञ के प्रति अत्यन्त ब्रह्म जाग्रत कर दी। प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेश श्री कुलदीप आर्य व अवनीश आर्य ने अपने भजनों से श्रोताओं को भाव–विभोर कर दिया।

– राजेन्द्र आर्य, उपमंत्री

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली

87वां वार्षिकोत्सव

16 से 22 नवम्बर, 2009

प्रवचन – वैदिक विद्वान् आचार्य हरिप्रसाद

समस्त आर्यसमाजों से निवेदन है कि इन तिथियों में अपना कोई आयोजन न करें तथा अधिकाधिक संख्या में पधारकर समारोह को सफल बनाने में अपना योगदान दें।

– अरुण प्रकाश वर्मा, प्रधान
नरेन्द्र सिंह हुड्डा, मन्त्री

आर्यसमाज विवेक विहार, दिल्ली में

वेद कथा का समापन

11 अक्टूबर, 2009

यज्ञ : प्रातः 6.30 से 8 बजे
ब्रह्माः आचार्य ब्रह्मदेव वेदालंकार
भजन : श्री दिनेशदत्त आर्य
मुख्यवक्ताः आचार्य यशपाल शास्त्री

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– गजेन्द्र सिंह सक्सेना, प्रधान
कृष्णलाल किनरा, मन्त्री

आर्यसमाज देव नगर, नई दिल्ली का

49वां वार्षिकोत्सव

22 से 25 अक्टूबर, 2009

यज्ञ : प्रातः 7 से 8 बजे
ब्रह्माः स्वामी माधवानन्द सरस्वती
भजन : श्रीमती सुदेश आर्या
भजन–प्रवचनःरात्रि 8 से 9 बजे
पूर्णाहुति व समापनः 25 अक्टूबर, 09

सभी आर्यजन सपरिवार पधारकर उत्साहवर्धन करें।

– नफेसिंह देसवाल, प्रधान
रमेश बेदी, मन्त्री

आर्यसमाज गन्नौर शहर सोनीपत का

वार्षिक यज्ञ का समापन

11 अक्टूबर, 2009

भजन : पं. राजवीर शास्त्री (दिल्ली)

सभी आर्यजन सपरिवार पधारकर उत्साहवर्धन करें।

– प्रतापचन्द भुटानी, प्रधान
उमेश भुटानी, मन्त्री

आर्यसमाज थर्मल कॉलोनी, पानीपत में

निःशुल्क क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 4,5,6 दिसम्बर, 2009
समय : प्रातः 7.30 से 9.30 बजे।
स्थानः आर्य व0 मा0 विद्यालय रेलवे रोड नरवाना (जिला जीन्द)।
प्रशिक्षकः आ० ज्ञानेश्वरार्य दर्शनाचार्य
आयोजकः महात्मा वेदपाल आर्य

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर उत्साहवर्धन करें।

– कमल कान्त आर्य, संयोजक

गुरुकुल होशंगाबाद (म.प्र.) के 98 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

दर्शन संगोष्ठी

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र) का 98 वां वार्षिकोत्सव दिनांक 11, 12, 13 दिसम्बर 2009 को आयोजित किया जा रहा है। इस उत्सव में देश के ख्यात नाम विद्वानों द्वारा विविध विषयों पर उपदेश व प्रवचन होंगे। साथ ही षड्वैदिक दर्शनों की संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें दर्शनों के विविध विषयों पर परिचर्चा होगी।

सभी आर्यजन उक्त कार्यक्रम में पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं व विद्वानों के प्रवचनों का लाभ लें।

– योगेन्द्र, सचिव

आर्य संस्थाएं एवं आर्यसमाजें वेद प्रचार विभाग का सहयोग लें

आपको विदित हो कि सभा के अन्तर्गत वेद प्रचार विभाग में 20 उच्च कोटि के विद्वान् अपनी सेवाएं दे रहे हैं। वे बृहद् यज्ञ, शतक यज्ञ, एवं वार्षिक उत्सवों में दिल्ली तथा आस–पास के क्षेत्रों में वेद प्रचार में संलग्न हैं। आगामी वेद प्रचार सप्ताह हेतु अथवा विशेष कार्यक्रम में आप उनकी सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। आचार्य खुशीराम जी वेद प्रचार अधिष्ठाता के रूप में कार्य कर रहे हैं। सभा कार्यालय एवं आचार्य जी से सम्पर्क कर लाभ उठाएं।

– आचार्य खुशीराम, फोनः 25708873

दर्शन योग महाविद्यालय में प्रवेश आरम्भ

18 वर्ष से अधिक अवस्था वाले ब्रह्मचारी जिनकी न्यूनतम योग्यता व्याकरणाचार्य, शास्त्री या स्नातक हो और जो दर्शन शास्त्र, ध्यानयोग, वैराग्य, निष्कामता, अध्यात्म आदि के द्वारा स्वयं को जीवन निर्माण तथा समाज राष्ट्र की सेवा के इच्छुक हो वे अपना आवेदन पत्र नाम, आयु, शिक्षा, अनुभव, सामाजिक कार्य आदि सहित शीघ्र ही भिजवावें। विद्यालय में भोजन, आवास, वस्त्र, घी, दूध, फल, पुस्तक, चिकित्सा इत्यादि सभी वस्तुएँ निःशुल्क प्राप्त कराई जाती है। योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय एवं वेदांत दर्शन तथा ग्यारह उपनिषद और वेद के चुने हुए अध्यायों का अध्यापन कराया जाता है। प्रतिदिन विवेक, वैराग्य, अभ्यास, ईश्वर– प्रणिधान, मनोनियन्त्रण, ध्यान, समाधि तथा स्वस्वामि–सम्बन्ध (ममत्व) को हटाना, इत्यादि आध्यात्मिक सूक्ष्म विषयों पर भी विस्तार से विवेचन किया जाता है। पत्राचार हेतु पता :–

दर्शन योग महाविद्यालय,
आर्य वन, रोजड़, पत्रा–सागपुर,
साबरकांठा, गुजरात– 383307
दूरभाष (02770) 257224, 287417, 291496

शोक समाचार

श्री अजय भल्ला को मातृशोक

आर्यसमाज के स्वर्णयुग की साक्षी शतायु माता वेदकुमारी का निधन

गुरुकुल कांगड़ी के पहली पीढ़ी के स्नातक व आजीवन आर्यसमाज तथा वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में संलग्न रहे स्व0 पंडित भीमसेन विद्यालंकार की पत्नी श्रीमती वेदकुमारी का निधन बुधवार 9 सितम्बर 2009 को अम्बाला छावनी में 101 वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने के बाद अत्यंत शांत वातावरण में हुआ। वे अपने पीछे तीन पुत्रों, दो पुत्रियों, पाँच प्रपौत्रों से भरापूरा परिवार छोड़ गयी हैं।

उनके परिवार के सभी सदस्य निरामिष भोजी, मादक द्रव्यों से परहेज करने वाले तथा महर्षि दयानन्द के प्रति गहरी श्रद्धा तथा वैदिक सिद्धांतों में पक्की आस्था रखने वाले हैं। उनके पुत्र–पुत्रियों सर्वश्री रामपाल विद्यालंकार पत्रकार,अजय भल्ला, अरुण भल्ला, प्रि0 शान्ता मल्होत्रा तथा प्रि0 उमा भल्ला समान रूप से आर्यसमाज में सक्रिय हैं।

स्वर्गीय माता वेदकुमारी आर्यसमाज के स्वर्णयुग सहित चार पीढ़ियों के गौरवपूर्ण इतिहास की साक्षी रही हैं। उनके पिता मास्टर लक्ष्मणदास व श्वसुर ला. बिशनदास भल्ला स्वामी श्रद्धानन्द (महात्मा मुंशीराम) के निकटतम सहयोगियों में थे। गुरुकुल की स्थापना के समय इन दोनों ने न केवल समुचित आर्थिक सहायता ही दी वरन् अपने अपने पुत्र हरिशरण सिद्धान्तालंकार (चतुर्वेद भाष्यकार) व भीमसेन विद्यालंकार (विभाजन पूर्व सत्रह वर्ष तक पंजाब प्रतिनिधि सभा के मंत्री) को भी महात्मा मुंशीराम को गुरुकुल शिक्षा के लिए सौप दिया।

माता वेदकुमारी की शिक्षादीक्षा लाला देवराज जी द्वारा स्थापित कन्या महाविद्यालय जालंधर में हुई। वे वहां शिक्षा पूरी करने वाली प्रथम स्नातिका दल की सदस्या थी। स्नातक परीक्षा में उन्हें स्वर्णपदक प्राप्त हुआ था।

पितृगृह लायलपुर में उन्हें महात्मा मुंशीराम, स्वामी सत्यानंद (बादमें अमृतवाणी के संस्थापक) व संन्यास में नव प्रविष्ट हुए विशालकाय स्वामी स्वतंत्रानन्द जी के दर्शनों की याद आजीवन रही। पतिगृह लाहौर में आर्यसमाज की विभूतियों पंडित चमूपति जी, पंडित विश्वम्भर जी आचार्य रामदेव जी स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ पंडित बुद्धदेव विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द) पंडित इन्द्र जी, पंडित सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार रायबहादुर बद्रीदास, ठाकुरदत्त जी अमृतधारा तथा महाशय कृष्ण जैसे त्यागी तपस्वी संन्यासियों और निस्वार्थ तेजस्वी नेताओं का सान्निध्य मिला। देश विभाजन के बाद अपने पति व परिवार के साथ अम्बाला में बस गयीं। सन् 1962 में भीमसेन जी के निधन के पश्चात गृहस्थी का सारा भार उन्हीं पर आ पड़ा। जिसे उन्होंने बड़ी खूबी से निभाया। बड़ी सूझबूझ से बच्चों को शिक्षा दीक्षा दिलवाने व जीवन में स्थापित करने के साथ ही आर्यसमाज और वैदिक सिद्धांतों के प्रति निष्ठावान बनाया। उनके निधन के साथ ही आर्यसमाज के एक गौरव पूर्ण इतिहास की साक्षी एक संस्कारित आत्मा विदा हुआ।

श्री कृष्णगोपाल दीवान को पत्नीशोक

दिल्ली की सुप्रसिद्ध, सुप्रतिष्ठित आर्यसमाज दीवानहॉल के प्रधान श्री कृष्णगोपाल दीवान जी की धर्मपत्नी जी का गत दिनों निधन हो गया। वे काफी समय से रोगग्रस्त थीं। वे बहुत ही उदार, धर्मपारायणा नारी थी। आर्यसमाज में वेअपना सहयोग प्रदान करती थीं।

श्री सोमदेव मुंजाल का निधन

आर्यसमाज कालकाजी नई दिल्ली के संस्थापक सदस्य, कर्मठ सदस्य, श्री सोमदेव मुंजाल जी का 84 वर्ष की आयु 1 अक्टूबर, 2009 को निधन हो गया। श्री मुंजाल जी का आर्यसमाज कालकाजी के उत्थान – सत्संग भवन, मैडिकल सैंटर, यज्ञशाला, अतिथि निवास आदि के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रहा। वे एक निष्काम कर्मयोगी थे, उन्होंने आर्यसमाज में कभी किसी पद को स्वीकार नहीं किया। वे अपने पीछे दो सुपुत्रों श्री सुरेन्द्र मुंजाल, रविन्द्र मुंजाल तथा दो सुपुत्रियों श्रीमती मंजू खट्टर एवं रेनू बंजानी का भरा–पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे उपरोक्त दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक–संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। –सम्पादक

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

5 अक्तूबर, 2009 से 11 अक्तूबर, 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक ८/९-१०-२००९
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००९-११
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

प्रतिष्ठा में,

विद्यार्थियों के लिए विशेष योजना

विद्यालयों के बच्चों को पढ़ाइए महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र

आपके बच्चों को मिल सकते हैं

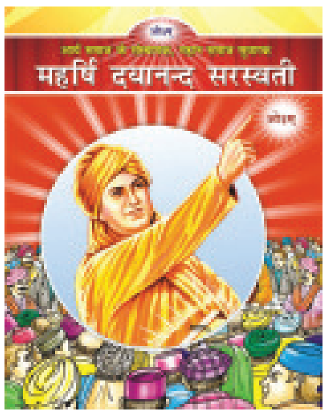

5,00,000 रु० से अधिक राशि के इनाम

देश के कोने कोने से आ रही भारी मांग के कारण प्रविष्टियां भेजने की

अन्तिम तिथि में पुन: वृद्धि

अब प्रविष्टियां भेजने की अन्तिम तिथि है 31 अक्तूबर, 2009

यह अन्तिम बढ़ोतरी है। इसके बाद अन्तिम तिथि में कोई वृद्धि नहीं की जाएगी। पुन: यह वृद्धि इसलिए की गई हैं क्योंकि पुस्तकें सुदूर भारत-अन्दमान निकोबार, मिजोरम, त्रिपुरा, नागालैंड, नेपाल आदि स्थानों पर भी भेजी गई हैं। अतएव अपनी प्रविष्टयां भेजने से पूर्व यह सुनिश्चित कर लें कि आपकी प्रविष्टियां कार्यालय को हर हालत में 31 अक्तूबर, 2009 से पूर्व प्राप्त हो जाएं। इसके बाद प्राप्त होने वाली किसी भी प्रविष्टि पर विचार नहीं किया जाएगा। अतएव जल्दी करें।

- संयोजक, प्रतियोगिता

ऋषि निर्वाणोत्सव पर रामलीला मैदान नई दिल्ली में पधारने वाले आर्यजनों के लिए

सुनहरा अवसर

आर्यसन्देश साप्ताहिक

आजीवन सदस्यता 500/- साथ में पाएं एक स्मारिका

योजना केवल मात्र 17 अक्तूबर को सभा स्टाल पर ही उपलब्ध होगी।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली-१; फोन : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : डॉ० ओमप्रकाश भटनागर